पूर्वजों की सीख

सतीशराज पुष्करणा

दो सीधी-सादी बिल्लियों में रोटी के बंटवारे को एक सफ़ेदपोश बन्दर निबटाने तथा बीच-बचाव करने एक तराज़ू लेकर आ गया। उसी पुरानी पारम्परिक धूर्त चाल की पुनः श्री गणेश। कभी एक पलड़ा भारी तो कभी दूसरा। कभी इधर की रोटी छोटी, तो कभी उधर की। बंटवारे की पूरी रोटी धीरे-धीरे बन्दर महाशय का ग्रास बन गई।

दोनों बिल्लियां जो अपने पूर्वज़ों से बन्दर की इस पारम्परिक चाल को भली-भांति समझे हुए थीं—एकाएक जब तक कि बन्दर संभले बिल्लियों का इक्कट्ठा हमला और बन्दर का काम तमाम।

कई दिनों बाद मांसाहारी भोजन मिलने से दोनों बिल्लियां खुशी-खुशी अपने-अपने घर की ओर यह कहते हुए बढ़ी जा रही थीं—"पूर्वजों की सीख सदैव लाभकारी होती है।" □